// logo: U.P.C.A.R.
उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः 1153/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 11–09–2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 11 सितम्बर, 2025 को वर्ष 2025–26 की सम्पन्न चौदहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की चौदहवीं बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 11 सितम्बर, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के पादप रोग वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के तकनीकी अधिकारी; बी.एच.यू. वाराणसी के पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी वैज्ञानिक तथा पशु चिकित्सा स्त्री रोग; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; सीएफआरआई, झांसी के वरिष्ठ वैज्ञानिक; राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (12–18 सितम्बर, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से अधिकय भाभर तराई एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र में यह सामान्य के आस–पास जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से कम होने की संभावना है।

मौसम चेतावनी– इस सप्ताह के आरंभिक चरण में भाभर तराई क्षेत्र एवं उत्तरी–पूर्वी मैदानी क्षेत्र जबकि अंतिम चरण में उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं संलग्न पूर्वी मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं भारी वर्षा होने की संभावना हैं।

प्रदेश के प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री से.; दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री से.; जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री से. रहने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (19–25 सितम्बर, 2025)

इस सप्ताह के आरंभिक चरण में प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में कुछ स्थानों पर छिटपुट हल्की वर्षा की संभावना के दृष्टिगत प्रदेश के पूर्वी एवं मध्यवर्ती भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से कम जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नगण्य औसत साप्ताहिक वर्षा के सापेक्ष यह आंशिक रूप से अधिक होने की संभावना है।

प्रदेश के प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 20 से 22 डिग्री से. उत्तर–पूर्वी मैदानी, पूर्वी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में यह 24 से 26 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री से. रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 11 सितम्बर, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 665.2 मि.मी. सामान्य वर्षा के सापेक्ष कुल 652.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 2 प्रतिशत कम है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 703.9 मिमी. सामान्य के सापेक्ष 15 प्रतिशत कम कुल 599.3 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 611 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 19 प्रतिशत अधिक कुल 727.7 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

प्रदेश में 01 जून से 11 सितम्बर, 2025 के दौरान बिजनौर जनपद में सर्वाधिक (1202.5 मि.ली.) वर्षा दर्ज की गई वहीं देवरिया में सबसे कम (76.2 मि.ली.) वर्षा दर्ज की गई है।

बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- वर्तमान मौसम धान की फसल में भूरा धब्बा एवं झोंका रोग के लिये अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा जीरम 80 के 2.0 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत को 3 ली. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।
- धान में जीवाणु झुलसा एवं जीवाणुधारी झुलसा के लक्षण दिखने पर 15 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90 प्रतिशत+टेट्रसाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत को 500 ग्राम कॉपर आकसीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. के साथ मिलाकर प्रति हेक्टेयर 500 से 750 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान में मिथ्या कण्डुआ (फाल्स स्मट) रोग से बचाव हेतु बाली निकलते समय प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. अथवा कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 500 ग्राम मात्रा 500 ली. पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- वर्तमान मौसम में सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- फलों के बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें। आम, अमरूद, लीची, आंवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला आदि के नवीन बाग लगायें।
- शरदकालीन गन्ना बुवाई का समय आ रहा है अतः बुवाई हेतु रोगरोधी नवीन गन्ना किस्मों यथा को.शा. 13235, को.लख. 14201, को. 15023, को.शा.17231, को.शा. 18231, को. लख. 16202, को.शा. 16233 आदि प्रदेश हेतु स्वीकृत किस्मों का ही बीज गन्ना सुरक्षित करें।
- बीज, गन्ना शोध संस्थान, गन्ना विकास परिषद की पौधशाला, बीज गन्ना उत्पादक कृषक आदि जैसे अधिकृत स्थानों से ही प्राप्त करें तथा रसीद सुरक्षित कर लें।
- गन्ना समिति में नई सदस्यता ऑनलाइन ग्रहण करें। गन्ने का कच्चा कैलेण्डर (प्री कैलेण्डर) जांच लें त्रुटि होने पर सुधार करवायें। समिति प्रदर्शन के मेले में आपूर्ति संबंधी आपत्तियों का निराकरण करा लें।
- अगेती आलू की बुवाई 15 सितंबर से प्रारंभ होगी अतः शीत भण्डारण गृह से आलू निकालकर उसे उपचारित कर दें।
- बटन मशरूम की खेती हेतु शीघ्र अतिशीघ्र कम्पोस्ट बनाना तथा ढिंगरी मशरूम का उत्पादन प्रारंभ कर दें।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत लम्पी त्वचा रोग (एल.एस.डी.) बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशुओं के दानों को नमी से बचाये ताकि एफ्लाटाक्सिन से बचाव किया जा सकें।

धान की खेती

- धान की फसल में पत्ती लपेटक, तनाछेदक, हरा फुदका एवं हिस्पा कीट से बचाव के लिये कार्टाप हाईड्रोक्लोराइड (50 एस.पी.) की 150 से 200 ग्राम मात्रा 200 ली. प्रति एकड़ पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गन्धी कीट के रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 125 मि.ली. अथवा एजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 ली. मात्रा प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी अथवा क्लोरपाइरीफॉस 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

तोरिया/सरसों की खेती

- तोरिया की संस्तुत प्रजातियां आजाद चेतना, भवानी, तपेश्वरी, पी.टी. 303 आदि की बुवाई खेत में उपयुक्त नमी की दशा में करें।
- अगेती सरसों की संस्तुत प्रजातियां आजाद महक, पूसा मस्टर्ड 25, पूसा मस्टर्ड 27, पूसा मस्टर्ड 28 की बुवाई करें।

उर्द–मूँग की खेती

- उर्द/मूंग की पत्तियों पर सुनहरें चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गयी हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलोमोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें।
- मूंग में सर्कोस्पोरा पत्तीधब्बा रोग की रोकथाम हेतु डीएम–45 2 ग्रा./ली. पानी अथवा कार्बेन्डाजिम 1 ग्रा./ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा दूसरा छिड़काव प्रथम छिड़काव के 10 से 15 दिन बाद करें।

मक्का की खेती

- मक्का की फसल पकने पर भुट्टों को ढ़कने वाली पत्तियां 75 प्रतिशत पीली पड़ने लगे, इस अवस्था पर कटाई की जाय। भुट्टों की तुड़ाई करके उसकी पत्ती को छीलकर धूप में सुखाकर हाथ या मशीन द्वारा दाना निकाल दें।

मूंगफली की खेती

- मूँगफली के खेतों में पानी खड़ा न रहने दें तथा हल्की नमी बनाये रखें।
- मूँगफली की पत्तियों पर हल्के भूरे रंग के गोल धब्बे बन जाते हैं जो कि टिक्का रोग के लक्षण हैं। प्रकोप होने पर मौसम अनुकूल होने पर ही मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.4 किग्रा. अथवा थीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर करें।
- मूँगफली की फसल में श्वेत गिडार व दीमक का प्रकोप होने पर इसकी रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफास–20 ई.सी. की 2.5–3.0 लीटर प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की फसल अब दाने भरने की अवस्था में है, जिस पर तम्बाकू की इल्ली के नियंत्रण हेतु डब्लू/डब्लू क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. (150 मि.ली./हे.) अथवा फ्लूबेंडामाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. (150 मि.ली./हे.) की दर से 500 से 600 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- फलीछेदक के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. (150 मि.ली./हे.) अथवा इमामैक्टिन बेजोएट 1.90 प्रतिशत ई.सी. (425 मि.ली./हे.) की दर से 500 से 600 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

तिल की खेती

- तिल में उचित परिपक्वता आने पर उसकी कटाई कर लें अन्यथा दानों के झड़कर गिरने की संभावना रहती है जिससे उपज पर प्रभाव पड़ेगा।

गन्ना की खेती

- गन्ने को गिरने से बचाने के लिये उचित प्रबंध करें।
- गन्ने में बैक्टीरियल रॉट बीमारी के लक्षण दिखने पर संक्रमित पौधे को काटकर नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु मौसम अनुकूल होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01 प्रतिशत का गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- जिन क्षेत्रों में गन्ने के खेतों में पानी भर गया था और वर्तमान में खेत से पानी निकल चुका है। उन खेतों में जड़ विगलन (रूट रॉट) के प्रबंधन हेतु मौसम अनुकूल होने की दशा में फफूंदनाशी थायोफिनेट मिथाइल 70 डब्लू.पी. अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. का 02 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर से गन्ने की जड़ों के पास ड्रेचिंग करें।

- लाल सड़न रोग से प्रभावित खेतों में मेड़बंदी कर दें, जिससे संक्रमित सिंचाई जल से स्वस्थ फसल प्रभावित न हो। लाल सड़न रोग से प्रभावित क्लंप/मूढ़ को उखाड़कर खेत से कहीं दूर नष्ट कर दें तथा उखाड़े गये स्थान पर ट्राइकोडर्मा से उपचार करें तथा बचाव हेतु मिथाइल 0.2 प्रतिशत की ड्रेचिंग करें।

सब्जियों की खेती

- आलू की अगेती किस्मों जैसे कुफरी चन्द्रमुखी तथा कुफरी अशोका की बुआई प्रारम्भ करें। बुआई के 7–10 दिन पहले शीत भण्डार से बीज आलू को बाहर निकालें। शीत भण्डारण में भण्डारित बीज में यदि अंकुर निकल आये तो उनको छॉटकर अलग कर दें।
- यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छॉटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखा लें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल की 01 मि.ली. मात्रा प्रति ली. पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- बैंगन की फसल में फोमोप्सिस ब्लाईट से बचाव के लिये थायोफिनएट मिथाइल की 1 से 1.5 मि.ली. मात्रा प्रति ली. पानी के साथ घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। फलों की तुड़ाई के बाद स्प्रे करें और अगली तुड़ाई 15 दिन बाद करें।
- मटर की प्रजाति यथा अर्किल, आजाद मटर–3, काशी नन्दिनी, काशी उदय एवं काशी मुक्ति के बीज की व्यवस्था करें ताकि सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में बुआई की जा सके।
- गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च, टमाटर, बैगन व मिर्च आदि की तैयार पौध की रोपाई मेड़ों पर करें।
- मूली, गाजर, चुकन्दर, शलजम एवं पत्तेदार सब्जियों की मेड़ो पर बुआई करें।
- शाकभाजी फसलों में विषाणुजनित रोगों का प्रकोप होने पर प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें तथा अन्तःप्रबाही (सिस्टमिक) कीटनाशक का छिड़काव कर दें।

बागवानी

- केले में वर्तमान मौसम में बीटल कीट का प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस (1.25 मि. ली./ली. पानी) का छिड़काव करें तथा कार्बोफ्यूरान 3 से 4 ग्रा. प्रति पौधे की दर से गोफे में तथा मृदा में मिलायें।
- केला में पर्णचित्तीय एवं एन्थ्रेकनोज रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराईड (3 ग्रा./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- आम के बाग के प्रथम दस वर्षों में अधिक लाभ के लिये अंतः फसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, लोबिया तथा ग्लेडियोलस की खेती की जा सकती है।
- मैंगोशूट गालमेकर (शाखा गॉठ कीट) से प्रभावित बागों में प्रकोपित शाखाओं को 4–5 इंच नीचे से काटकर नष्ट करें तथा क्यूनालफास 2.5 ई.सी. अथवा डाइमेथोएट 30 ई.सी. की 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पेड़ों पर छिड़काव करें। आम के बागों में रेड रस्ट अथवा ऐन्थ्रेकनोज का प्रकोप होने की दशा में कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्राम/ली0 पानी) का छिड़काव करें।
- ऑवले में फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु मौसम अनुकूल होने की दशा में बोरेक्स (6–8 ग्राम/लीटर पानी) को छिड़काव करें तथा उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का थालों में प्रयोग करें।

पशुपालन

- वर्तमान मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- नैपियर घास की जड़ों/रूट स्लिप की रोपाई करें, जिससे 4 से 5 वर्ष तक हरा चारा लगातार पशुओं को प्राप्त होता रहे।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।

- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- थनैला रोग से बचाव हेतु दूध निकालने से पहले एवं बाद में हाथों व थनों की अच्छी तरह पानी से सफाई करें तथा थनों को गीला न रहने दें। थनैला रोग के उपचार निकटतस्थ पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर लाभ प्राप्त करें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मत्स्य पालन

- तालाब में जल स्तर 1.5 से 2 मी. बनाये रखे।
- तालाब में वर्षा का पानी आने से यदि जल अशुद्ध हो जाय या अधिक ठंडा हो जाय तो जल की आंशिक निकासी कर साफ पानी भरें।
- जल का पी.एच. 7 से 8 के बीच में बनाये रखें आवश्यकता हो तो चूना (200 से 300 कि.ग्रा./हे.) का प्रयोग करें।
- पानी की आक्सीजन की पर्याप्त मात्रा रखें तथा सुबह के समय एरेटर का प्रयोग करें
- वर्षा के समय चारा डालने से बचें क्योंकि अधिक चारा अपचय होकर जल को प्रदूषित कर सकता है।
- जल को कीटाणुरहित रखने के लिये सप्ताह में एक बार पोटाश (2 से 3 कि.ग्रा./हे.) का प्रयोग करें।
- जल की पारदर्शिता 30 से 40 के बीच होनी चाहिये। यदि बहुत कम हो जाय तो खाद डालना बंद कर दें।
- वर्षा के समय तालाब की मेड़ को मजबूत रखें, कहीं से पानी का रिसाव न हो।
- जल निकास स्थल पर जाली लगायें ताकि मछलियां बाहर न निकल सकें।

रेशम

- प्रदेश में शहतूती पतझड़ फसल 20 से 25 सितम्बर, 2025 के मध्य आरंभ होने जा रही है इस हेतु कृषकों/कीटपालकों को सुझाव दिया जाता है कि विशुद्धीकरण आदि का कार्य पूर्ण कर लें।
- टसर सेक्टर अन्तर्गत डाबा फसल 13 से 14 सितम्बर, 2025 के मध्य प्रारंभ होने जा रही है इस हेतु समस्त आवश्यक कार्य पूर्ण कर लें।
- कृषक/कीटपालक ई–डिस्ट्रिक विभागीय यू.आर.एल. ***http://sericulture.eservicesup.in*** पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554 ।

वानिकी

- वृक्षारोपण का कार्य अतिशीघ्र समाप्त करें जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर नये पौधों का रोपण करें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- राज्य सरकार (बेमौसम भारी वर्षा/अतिवृष्टि, आकाशीय बिजली, आंधी–तूफान, नाव दुर्घटना, सर्पदंश, सीवर सफाई/गैस रिसाव, बोरवेल में गिरना, मानव वन्य जीव द्वन्द (जंगली जानवरों का हमला), कुआं, नदी, झील, तालाब, पोखर, नहर, नाला, गढ्ढा, जलप्रपात में डूबना एव वनरोज व सांड के आघात से मृत्यु) द्वारा अधिसूचित आपदाओं के सापेक्ष मृत्यु होने की स्थिति में पीड़ित परिवारों को रु. 4 लाख की अहैतुक सहायता प्रदान की जाती है।
- सहायता हेतु सम्पर्क सूत्र नं. 1070 राहत आपदा कन्ट्रोल रूम पर सम्पर्क कर सकते हैं। किसान भाई आपदा प्रबंधन हेतु अधिक जानकारी के लिये संबंधित जनपद के डिस्ट्रिक डिजास्टर मैनेजमेंट एथोरिटी से सम्पर्क स्थापित कर जानकारी प्राप्त करें।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(**संजय सिंह**)
महानिदेशक

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम,

मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
49. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की चौदहवीं बैठक दिनांक 11 सितम्बर, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री ए.के. सिंह, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
5. डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.शि.त.ह.), उपकार, लखनऊ
6. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
7. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
8. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
9. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
12. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
13. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
14. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
15. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
16. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विषेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
17. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
19. डा. आशाराम सिरवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएफआरआई, झांसी (ऑनलाइन)।
20. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।
21. डा. जे. जॉरबेन, सहायक प्राध्यापक (अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।
22. डा. हिमांशु तिवारी, तकनीकी सहायक महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
23. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, शुआट्स, प्रयागराज (ऑलनाइन)।
24. डा. रिन्नी सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी (पादप प्रजनन/जैव प्रौद्योगिकी), उपकार, लखनऊ।
25. श्री अभिजीत, वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि प्रसार), उपकार, लखनऊ।
26. श्री प्रेमचंद चौरसिया, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
27. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।